ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol-3* Issue-3*April- 2018
Innovation The Research Concept

सामान्य एवं विकलांग बालकों में नैराश्य व उसके विभिन्न पक्षों का तुलनात्मक अध्ययन

भारती सिंह
विभागाध्यक्ष,
शिक्षाशास्त्र विभाग,
राणा प्रताप पी0जी0 कालेज,
सुल्तानपुर, उ0प्र0

एस0 पी0 सिंह
पूर्व विभागाध्यक्ष,
बी0एड0 एवं एम0एड0 विभाग,
के0एन0आई0पी0एस0एस0,
सुल्तानपुर, उ0प्र0

सारांश

सामान्य वर्ग के विद्यार्थियों की तुलना में विकलांग वर्ग शिक्षा के उचित प्रबन्ध से वंचित रहा है। यूँ तो देश में नेत्रहीनों या मूक बधिरों के विद्यालय खुले हुए हैं किन्तु विकलांगों की संख्या की दृष्टि से यह बहुत कम है। सामान्य एवं विकलांग बालकों में नैराश्य एवं उसके विभिन्न पक्षों का तुलनात्मक अध्ययन के फलस्वरूप पाया गया कि प्रतिगमन की भावना में कोई अन्तर नहीं पाया गया जबकि स्थरण, समर्पण एवं आक्रमण जैसे आयामों में दोनों के बीच सार्थक अन्तर पाया गया। सामान्य एवं पोलियो ग्रस्त बच्चों में आक्रमण आयाम पर सार्थक अन्तर एवं अन्य पर असार्थक अन्तर पाया गया। सामान्य एवं नेत्रहीन बच्चों में स्थरण, समर्पण और आक्रमण आयाम पर सार्थक अन्तर एवं प्रतिगमन पर असार्थक अन्तर पाया गया।

अतः इस अध्ययन से स्पष्ट है कि समाज के विकास के लिए विकलांग विद्यार्थियों हेतु एक सार्थक प्रयास की आवश्यकता है जिससे उनको मुख्य धारा से जोड़ा जा सके। भावनात्मक स्तर पर विकलांग बालक सामान्य बालकों से अधिक कुंठाग्रस्त हैं शिक्षक को ऐसे कुंठाग्रस्त बालकों के साथ सामन्जस्य स्थापित करने की आवश्यकता है। इस तरह एक ऐसे माहौल की जरूरत है जहां विकलांग बालक भी अपने को योग्य समझे, दूसरों से हीन नहीं। समाज एवं लोगों को भी ऐसे बच्चों के प्रति संवेदनशील होना चाहिए जिससे उनका आत्म सम्मान बना रहे।

मुख्य शब्द : विकलांग बालक, नैराश्य

प्रस्तावना

1950 में जब भारत सरकार ने देश का संविधान गठित किया तो यह शैक्षिक नीति अपनाई कि देश के सभी वर्गों को शैक्षिक अवसरों की समानता प्रदान की जायेगी। इसी नीति के परिप्रेक्ष्य में लड़कियों एवं पिछड़े –प्रदेशों में शिक्षा के प्रसार की चेष्टाएं निरन्तर की गई। किन्तु समय के अभाव के कारण या कुछ सीमा तक उदासीनता के कारण देश का एक विशिष्ट वर्ग शिक्षा के उचित प्रबन्ध से वंचित रहा यह वर्ग विकलांग वर्ग है। यूँ तो देश में नेत्रहीनों या मूक बधिरों के विद्यालय खुले हुए हैं किन्तु विकलांगों की संख्या की दृष्टि से यह बहुत कम हैं। समाज में आमतौर पर विकलांग बालक परिवार पर बोझ समझे जाते हैं। सामान्य बालकों के विद्यालय में इनकी शिक्षा का उचित प्रबन्ध नहीं होता है। समाज व परिवार में ऐसे बालकों को सहानुभूति और दया की दृष्टि से देखा जाता है। उन्हें कभी भी स्वतन्त्र व स्वावलम्बी व्यक्ति नहीं समझा जाता है। यदि कोई विकलांग स्वावलम्बी बनने का प्रयास करता भी है तो उसे प्रोत्साहन नहीं मिलता है और विकलांग आश्चर्य की दृष्टि से देखा जाता है। फलस्वरुप ऐसे बालक अपने में सीमित रह जाते हैं, दूसरों से मिलने–जुलने में झिझक महसूस करते हैं। वे सामान्यता कम समायोजित रहते हैं। विशेष रुप से नेत्रहीन बालक जो वाहय जगत से पूर्णतया अनभिज्ञ रहते हैं अपने ही मानसिक व भावनात्मक दायरे में सीमित होकर रह जाते हैं। वे अपनी भावनाओं का प्रदर्शन सरलता से नहीं कर पाते हैं।

इसके विपरीत पोलियो ग्रस्त व मूक बधिर बालक जो सब कुछ देख सकने पर भी आसानी से सामान्य जीवन नहीं व्यतीत कर सकते हैं, अधिक आक्रोश प्रदर्शित करते हैं। यह सभी व्यवहार कुण्ठा के प्रतीक हैं। किन्तु समाज व परिवार में उनके इस व्यवहार की सामान्यतया भर्त्सना की जाती है जिसके इन भावनाओं में और अधिक वृद्धि होती है। यदि इन्हें हम ठीक से समझा जाएं तो ये बालक सामान्य बालकों की तरह उपलब्धियाँ प्राप्त कर सकते हैं, क्योंकि मानसिक रुप से ये बालक सामान्य बालक ही हैं।

अध्ययन का उद्देश्य

1. नेत्रहीन बालकों में नैराश्य का अध्ययन करना।
2. पोलियो ग्रस्त बालकों में नैराश्य का अध्ययन करना।
3. मूकबधिर बालकों में नैराश्य का अध्ययन करना।
4. ऊपर अंकित विभिन्न विकलांगों के समूहों में नैराश्य व उसके विभिन्न पक्षों का सामान्य बालकों के नैराश्य का तुलानात्मक अध्ययन करना।

न्यादर्श का चयन

प्रस्तुत अध्ययन में 140 बालकों का न्यादर्श लिया गया है जिसमें 80 सामान्य बालक एवं 60 विकलांग बालक (20 नेत्रहीन 20 मूक बधिर व 20 पोलियो ग्रस्त) हैं।

प्रयुक्त उपकरण

'नैराश्य मापा—डा0 एन0एस0 चौहान' एवं गोविन्द तिवारी। इस नैराश्य उपकरण में कुल 40 प्रश्न हैं जोकि चार नैराश्य प्रकारों से सम्बन्धित हैं ये चार नैराश्य प्रकार इस प्रकार हैं–प्रतिगमन, स्थरण, समर्पण और आक्रमण। प्रत्येक नैराश्य प्रकार पर 10 प्रश्न हैं परीक्षण का प्रत्येक पद पाँच बिंदु मापनी से सम्बन्धित है। प्रत्येक प्रश्न का चयन निर्णायकों की रेटिंग के आधार पर लिया गया है। इस परीक्षण के शतांशीय मानक उपलब्ध हैं। परीक्षण को व्यक्तिगत और सामूहिक दोनों ही ढंगों से प्रशासित किया जा सकता है।

मूल्यांकन

नैराश्य मापा का मूल्यांकन दिये गये निर्देशों के आधार पर प्रत्येक रिकार्डिंग शीट पर किया गया है।

प्रदत्तों की व्याख्या एवं विश्लेषण

न्यादर्श हेतु चयन विकलांग बालकों पर डा0 चौहान और तिवारी के नैराश्य मापा का प्रशासन किया गया है प्रशासित करने के उपरान्त प्राप्तांकों के दिये गए निर्देशों के आधार पर रिकार्डिंग शीट पर लिया गया।

अध्ययन का उद्देश्य सामान्य एवं विकलांग (नेत्रहीन, मूक बधिर, पोलियो ग्रस्त) बालकों में नैराश्य व उसके विभिन्न पक्षों का तुलनात्मक अध्ययन करना है। इसके अतिरिक्त अध्ययन के अन्य उद्देश्य नेत्रहीन एवं मूक बधिर एवं पोलियोग्रस्त, पोलियोग्रस्त एवं नेत्रहीन के नैराश्य की तुलना करना भी है। अतः उपरोक्त उद्देश्य की प्राप्ति के लिये विभिन्न समूहों की तुलना भिन्न विधि से की गई है–

तालिका नं0 1
सामान्य एवं विकलांग बालक

नैराश्य	क्रान्तिक निष्पर्ति	सार्थकता स्तर
प्रतिगमन	1.42	असार्थक
स्थरण	4.19	.01
समर्पण	2.19	.05
आक्रमण	7.15	.01

तालिका एक से स्पष्ट है कि सामान्य एवं विकलांग बालकों में प्रतिगमन की भावना में कोई अन्तर नहीं पाया गया। स्थरण में जो अन्तर पाया गया वह .01 स्तर पर सार्थक था। समर्पण में .05 स्तर पर अन्तर पाया गया जो कि किसी आकस्मिक कारणों से उत्पन्न हो सकता है। और आक्रमण की प्रवृत्ति में पाया जाने वाला अन्तर भी .01 स्तर पर सार्थक था।

तालिका नं0 2
सामान्य एवं विभिन्न विकलांग बालक

नैराश्य	सामान्य एवं नेत्रहीन	सामान्य एवं बधिर	सामान्य एवं पोलियो ग्रस्त
प्रतिगमन	.23 असार्थक	.72 असार्थक	1.01 असार्थक
स्थरण	4.40 .01	7.96 .01	1.77 असार्थक
समर्पण	5.09 .01	1.67 असार्थक	1.07 असार्थक
आक्रमण	11.12 .01	3.67 .01	2.41 .01

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि सामान्य एवं नेत्रहीन बालकों में प्रतिगमन की प्रवृत्ति समान पाई गई। समर्पण स्थरण और आक्रमण की प्रवृत्ति में .01 स्तर पर सार्थक अन्तर पाया गया।

सामान्य एवं बधिर बालकों के मध्य प्रतिगमन और समर्पण की भावना में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया एवं स्थरण और आक्रमण की भावनाओं में .01 स्तर पर सार्थक अन्तर पाया गया।

तालिका नं0 3
नेत्रहीन एवं पोलियो ग्रस्त

नैराश्य	टीस्कोर	सार्थकता स्तर
प्रतिगमन	.69	असार्थक
स्थरण	1.96	असार्थक
समर्पण	2.09	.05
आक्रमण	3.71	.01

तालिका 3 से स्पष्ट है कि नेत्रहीन एवं पोलियो ग्रस्त बालकों के मध्य प्रतिगमन और स्थरण की भावना में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। समर्पण की भावना में दोनों के मध्य .05 स्तर पर अन्तर पाया गया जो कि किसी दुर्घटना वश उत्पन्न हो सकता है। इसी तरह दोनों के मध्य आक्रमण की प्रवृत्ति में .01 स्तर पर सार्थक अन्तर पाया गया।

तालिका नं0 4
नेत्रहीन एवं मूकबधिर

नैराश्य	टीस्कोर	सार्थकता स्तर
प्रतिगमन	.09	असार्थक
स्थरण	2.12	.05
समर्पण	5.63	.01
आक्रमण	5.75	.01

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि मूकबधिर एवं नेत्रहीन बालकों के मध्य प्रतिगमन की प्रवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। समर्पण और आक्रमण की प्रवृत्ति में .01 स्तर पर सार्थक अन्तर पाया गया और स्थरण की भावना में दोनों के मध्य .05 स्तर तक सार्थक अन्तर पाया गया जो कि आकस्मिक कारणों से उत्पन्न हो सकता है।

तालिका नं0 5
मूकबधिर एवं पोलियो ग्रस्त

नैराश्य	टीस्कोर	सार्थकता स्तर
प्रतिगमन	.55	असार्थक
स्थरण	.11	असार्थक
समर्पण	1.90	असार्थक
आक्रमण	.86	असार्थक

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि मूकबधिर एवं पोलियो ग्रसत बालकों के मध्य नैराश्य के विभिन्न पक्षों प्रतिगमन, स्थरण, समर्पण और आक्रमण में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।

निष्कर्ष

1. सामान्य एवं विकलांग बालकों (नेत्रहीन, मूकबधिर व पोलियो ग्रस्त) में प्रतिगमन की भावना समान पाई गई।
2. सामान्य बालकों की अपेक्षा विकलांग बालकों में स्थरण की प्रवृत्ति अधिक पाई गई। जबकि समर्पण में दोनों में बहुत कम अन्तर पाया गया जो कि किसी आकस्मिक घटना से उत्पन्न हो सकता है।
3. आक्रमण की प्रवृत्ति विकलांग बालकों की अपेक्षा सामान्य बालकों में अधिक पाई गई।
4. सामान्य बालकों की अपेक्षा नेत्रहीन एवं बधिर बालकों में स्थरण की भावना बहुत अधिक पाई गई।
5. सामान्य एवं पोलियो ग्रस्त बच्चों में स्थरण की भावना में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।
6. नेत्रहीन बालक अपनी परिस्थितियों के समक्ष समर्पण की भावना रखने वाले पाये गये जबकि सामान्य नेत्रहीन एवं बधिर बालकों में समर्पण की भावना में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।
7. सामान्य बालक नेत्रहीन, बधिर व पोलियो ग्रस्त बालकों की अपेक्षा अधिक आक्रामक प्रवृत्ति वाले पाये गये।
8. नेत्रहीन एवं पोलियो ग्रस्त बच्चों में प्रतिगमनात्मक व स्थरणात्मक प्रवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। समर्पण की प्रवृत्ति में नेत्रहीन एवं पोलियोग्रस्त बालकों के मध्य .05 स्तर पर सार्थक अन्तर पाया गया जो कि आकस्मिक रुप से उत्पन्न हो सकती है। आक्रमण की भावना नेत्रहीनों की अपेक्षा पोलियोग्रस्त बालकों में अधिक पाई गई।
9. नेत्रहीन व बधिर बालकों में नैराश्य विभिन्न पक्षों के प्राप्ताकों के अध्ययन करने पर दोनों में प्रतिगमन की प्रवृत्ति में कोई अन्तर नहीं पाया गया। जबकि स्थरण में .05 स्तर पर अन्तर पाया गया समर्पण की प्रवृत्ति नेत्रहीनों में अधिक पाई गई जबकि आक्रमण की प्रवृत्ति नेत्रहीनों की अपेक्षा बधिर बालकों में अधिक पाई गयी।
10. पोलियोग्रस्त व बधिर बच्चों में नैराश्य के विभिन्न पक्ष प्रतिगमन स्थरण, समर्पण और आक्रमण में कोई अन्तर नहीं पाया गया।

विकलांग बालकों की शिक्षा एवं देखरेख केवल व्यवसायिक दृष्टिकोण रखने वाला अध्यापक ही नहीं कर सकता है। इस कार्य के लिये मानवता की भावना शिक्षक का सर्वप्रथम गुण होना चाहिए। वह प्रत्येक बालक को एक अनोखा व्यक्तित्व समझ कर ही शिक्षित कर सकता है। एक ऐसा व्यक्तित्व जिसको कुछ अपनी विशिष्ट आवश्यकतायें व परिस्थितियां होती है।

जैसा कि इस अध्ययन से इंगित होता है कि भावनात्मक स्तर पर यह बालक सामान्य बालकों से अधिक कुंठाग्रस्त है (यद्यपि विभिन्न पक्षों के अन्तर नाम मात्र ही है) शिक्षक को ऐसे कुंठाग्रस्त बालकों के साथ सामन्जस्य स्थापित करने की आवश्यकता है।

यदि कक्षा की किसी विपरीत परिस्थिति के कारण पोलियोग्रस्त या मूकबधिर बालकों में आक्रमण की प्रवृत्ति दिखाई दे या वे अकारण आक्रोश प्रदर्शित करें तो उन्हें दोषी ठहराना ठीक नहीं होगा। यदि शिक्षक उनके मनों भावों को भली प्रकार समझकर उन्हें नियंत्रित करें तो संभवतः यह भावना कम दिखायी देगी।

अतः शिक्षक को चाहिए कि वह ऐसे गुणों का विकास करें कि विकलांग बालक भी अपने को योग्य समझें, दूसरों से हीन नहीं। यदि उनमें आत्म विश्वास व आत्म सम्मान की भावना होगी तो वे समाज में अपना स्थान सरलता से बना सकेगें।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. *बर्कोविज,आई.–''दि फ्रस्टेशन– अग्रसेन हाईपोथेसिस'' न्यूयार्क, अलथर्टन प्रेस, 1978*
2. *कोलेमन, जेम्स – ''एबानर्मल साईकोलाजी एण्ड मार्डन लाईफ'' स्काट एण्ड कम्पनी, 1986*
3. *चौहान,एस.एस.–''एडवान्स ऐजुकेशनल साईकोलाजी,'' विकास पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली 1974*
4. *चौहान एवं तिवारी – ''नैराश्य मापा'' इण्टरनेशनल डिसर्टेशन ऐक्सट्रैक्ट 1995.*
5. *डोनाल्ड, जे0 – ''फ्रस्ट्रेशन एण्ड अग्रसेन ', न्यू हेवेन, येल यूनिवर्सिटी प्रेस, 2004*